M.A. II Semester, Pol. Sc.
Course III
उत्तर- व्यवहार वाद
(Post- Behaviouralism)
Dr. Madhu Bala Gupta

उत्तर-व्यवहारवाद, व्यवहारवाद का अगला चरण है। यह एक प्रतिक्रिया, एक सुधारवादी आन्दोलन व एक नवीन दिशा है। 1959-60 ई० में अमेरिकन विश्वविद्यालयों में व्यवहारवाद की असफलता के कटु अनुभव ने ईस्टन के दृष्टिकोण में मूलभूत परिवर्तन ला दिया था। उसके शब्दों में "पिछली क्रान्ति-व्यवहारवाद अपनी पूर्णता से पूर्व ही बढ़ते हुए सामाजिक संकटों से घिर चुकी है। हमारे विषय में इन समस्त संकटों को उस नवीन संघर्ष के रूप में आंका जा रहा है, जिसमें हम आबद्ध हो चुके हैं। यह नवीन एवं तत्कालीन चुनौती व्यवहारवाद की बढ़ती हुई रुढ़िवादिता के विरुद्ध निर्दिष्ट है। इस चुनौती को मैं उत्तर व्यवहारवाद कहूँगा।" इन नवीन परिवर्तनों को उसने उत्तर व्यवहारवादी सुधार कहा है। वास्तव में उत्तर व्यवहारवाद, व्यवहारवादी क्रान्ति के विरुद्ध असंतोष का परिणाम है। इसमें व्यवहार परक लक्ष्यों और उपलब्धियों का त्याग किये बिना राजनीतिक ज्ञान की समाज के लिये उपयोगिता एवं शोध प्राथमिकताओं के विषय में सोचा जा रहा है। ईस्टन ने बतलाया है कि पाँचवें दशक में उसके प्रतिपादित विचारों में परिवर्तन व संशोधन हुआ है।

## उत्तर व्यवहारवाद के जन्म के कारण
## (Causes for Growth of Post-Behaviouralism)

उत्तर व्यवहारवादी क्रांति का जन्म व्यवहारवादी रूढ़िवादिता, जड़ता और दिशा-विहीनता के कारण हुआ। व्यवहारवादी क्रांति के साथ ही विश्व अनेक समस्याओं से घिर गया। परमाणु-युद्ध का भय, अमेरिका में गृह-युद्ध, बढ़ती हुई निरकुशता, वियतनाम में अघोषित युद्ध, जनसंख्या-विस्फोट, प्रदूषण आदि घटनायें

12. "If there are several limitations to behaviouralism we ought not for this reason to ignore the restrictions characteristics as well of non-behavioural app.oaches. No one prospective on the problems of political ordering is without its difficulties and even if we assume that all are used all limits remain. To achieve political order in human affairs is, as the ancients were often pointing out, a labour requiring divine gifts; yet we are called upon to carry out this super—human work with the equipment merely of men.'—*Sibley*

व्यवहारवाद को चुनौती देने लगीं। यह प्रकट हो गया कि व्यवहारवाद 'राजनीति का विशुद्ध विज्ञान' बनने की आड़ में समाज के प्रति अपने दायित्व की अवहेलना कर रहा है, तथा उसके आदर्शों का समाज की समस्याओं के तत्काल समाधान के साथ कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध न था।

व्यवहारवाद की इस असफलता का मुख्य कारण था कि इसके आधार पर किये गये राजनैतिक विश्लेषण में प्रामाणिक अध्ययन (Epiricism) के काल में मूल्यों (Values) को उपयुक्त स्थान नहीं प्रदान किया गया व विषय वस्तु (Substance) की अपेक्षा तकनीक को अधिक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया, जो उचित न था। इससे राजनैतिक विश्लेषण वैज्ञानिक तो हो गया पर उसमें सार्थकता (Relevance) व 'वैध शाश्वता' का सर्वथा अभाव रहा।

ईस्टन ने अपनी पुस्तक **'राजनीतिक व्यवस्था'** (The Political System) में उत्तर व्यवहारवाद के तीन स्रोत बताये हैं—

1. राजनीतिक विज्ञान को प्राकृतिक विज्ञान बनाने के प्रयत्नों के प्रति असंतोष।
2. भावी समस्याओं के समाधान हेतु उत्कृष्ट इच्छा।
3. एक बौद्धिक प्रवृत्ति तथा राजवैज्ञानिकों के समूह के रूप में संचालित आन्दोलन।

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि उत्तर व्यवहारवाद की उत्पत्ति के प्रमुख कारण इस प्रकार हैं—

1. उत्तर-व्यवहारवाद अमेरिका के विश्वविद्यालयों में राजनीतिक शोध के प्रति असन्तोष का परिणाम है। उन्होंने यह अनुभव किया है कि राजनीतिक शोध कार्य (Political Research Works) केवल बहुत छोटे वर्ग के शोध के लिये ही उपयुक्त हैं। उनकी मान्यता है कि व्यवहारवादियों का राजनैतिक अध्ययन को प्राकृतिक विज्ञानों के तुल्य विज्ञान बनाना न केवल अवांछनीय है वरन् असम्भव भी है। व्यवहारवादी पद्धति को किसी सर्वमान्य सिद्धान्त अथवा ऐसे सिद्धान्त जो सदैव और सर्वत्र लागू किया जा सके, सम्भव नहीं है।
2. तकनीकी विकास (Technical Developments) व परमाणु शक्ति (Atomic Energy) के आविष्कार ने विदेशी सम्बन्धों में परिवर्तन ला दिया है। निर्भर राष्ट्रों (Dependent Nations) व विकासशील देशों (Developing countries) की विभिन्न समस्याओं, जातीय भेद, राजनैतिक व्यवस्थाओं के असन्तुलन इत्यादि के परिणामस्वरूप, उत्तर-व्यवहारवादियों ने अपना ध्यान आर्थिक विकास (Economic Development) व्यवस्थाओं की असन्तुलनता इत्यादि पर केन्द्रित किया। व्यवहारवाद इस दिशा में उपयुक्त न था।
3. व्यवहारवादियों ने स्वयं को पुस्तकालयों में किये शोधों तक ही सीमित रखा। उनकी अध्ययन सामग्री राजनैतिक व्यवस्थाओं के सन्तुलन व स्थायित्व

इत्यादि ही रही। अपने शोध के क्षेत्र के बाहर पतन हो रही सामाजिक व्यवस्था के प्रति वे उदासीन थे। इस क्षेत्र में उत्तर-व्यवहारवादी अग्रसर हुए। उन्होंने आत्म-निर्भर तकनीकों का आविष्कार कर राजनैतिक विश्लेषणों के द्वारा सामाजिक समस्याओं को सुलझाने में व्यक्तिगत भाग पर विशेष जोर दिया।

4. व्यवहारवाद की कमियाँ, असमर्थतायें व अकर्मण्यता स्पष्ट होने लगी थी। विभिन्न क्षेत्रों जैसे अणु-अन्वेषण, अमेरिका में गृह-युद्ध (Civil War in U.S.A.) इत्यादि के सम्बन्ध में व्यवहारवादी भविष्यवाणी न कर सका। उसकी इस असमर्थता के परिणामस्वरूप उसे अनुपयुक्त माना जाने लगा व उसमें विद्वानों की आस्था कम होने लगी।

इन विभिन्न कारणों व स्वयं को समयानुसार परिवर्तित न कर सकने के कारण और सार्थकता तथा क्रिया (Relevance and action) की अपर्याप्तता के कारण व्यवहारवाद के स्थान पर उत्तर व्यवहारवाद की स्थापना की गई। इस विषय में स्वयं ईस्टन ने प्रश्न किया "क्या हमें विषय के व्यवहारवादी या अन्य स्थाई स्वरूप को स्वीकार करना चाहिये या नहीं या हमें इसके स्वरूप को बदलती माँगों के अनुसार परिवर्तित करना चाहिये।"[13]

## उत्तर-व्यवहारवाद की विशेषतायें
## (Chief Characteristics of Post Behaviouralism)

उत्तर-व्यवहारवादी आन्दोलन में शुद्ध राज-वैज्ञानिक एवं शास्त्रीय विचारक दोनों ही सम्मिलित हैं। पर इसे **'परम्परावाद का पुनरुत्थान'** नहीं समझ लेना चाहिये। यद्यपि परम्परावाद और उत्तर-व्यवहारवाद में यह सादृश्य है कि दोनों ही व्यवहारवाद के कट्टर शत्रु हैं, तथापि उनमें यह भिन्नता है कि परम्परावाद व्यवहारवाद की उपस्थिति को स्वीकार ही नहीं करता जबकि उत्तर-व्यवहारवाद, व्यवहारवाद की उपलब्धियों को स्वीकार कर उन्हें नवीन क्षितिज की ओर ले जाने का प्रयत्न करता है। यह 'प्रतिक्रिया' न होकर 'क्रान्ति' है। यह सुधार है, प्रति-सुधार नहीं।[14] यदि परम्परावाद (Traditionalism) इतिहासोन्मुख (Historical Oriented) है तब उत्तर-व्यवहारवाद भविष्योन्मुख (Future Oriented) है। यह आन्दोलन व प्रवृत्ति दोनों ही है। पर यह विशेष राजनीतिक धारा (Political Ideology) नहीं है। इसमें सभी विचारधाराओं के व्यक्ति सम्मिलित हैं—कट्टर पद्धति-वैज्ञानिक, मूल्य-वादी अनुदार एवं उदार राजनीति वैज्ञानिक, वामपंथी, दक्षिण-पंथी इत्यादि। इसका उद्देश्य था "वर्तमान राजनैतिक अध्ययन की दिशा के प्रति गहरा असन्तोष"।

13. Must we be committed eternally to an unchanging image of the discipline, behavioural or otherwise! Is it not incumbent on us to take account of changing conditions and to be ready and willing to reconsider old images and modify them to the extent deemed necessary. - *Easton.*

14. 'It was a genuine revolution, not a reaction, a becoming, not a preservation, a reform not a counter-reformation" —*Easton.*

व्यवहारवाद की मुख्य विशेषतायें इस प्रकार हैं—

1. विषय सामग्री को प्रविधियों और पद्धतियों से अधिक महत्व प्रदान किया जाना चाहिये। व्यवहारवाद का मन्त्र था "अस्पष्ट होने से गलत होना अच्छा है" जबकि उत्तर-व्यवहारवादी असंगतिपूर्ण परिशुद्धता की अपेक्षा अस्पष्ट होना अधिक युक्तिसंगत मानते हैं। वे प्रविधि की अपेक्षा विषय-वस्तु को अधिक महत्व देते हैं तथा गवेषणा के सूक्ष्म उपकरणों को खोजने की अपेक्षा सामाजिक समस्याओं का समाधान करना अधिक आवश्यक समझते हैं।

2. व्यवहारवाद यथास्थिति को उचित मानता है, उसमें मामूली परिवर्तनों से सम्बन्धित रूढ़िवाद की विचारधारा निहित है। उत्तर-व्यवहारवाद परिवर्तनवादी है। यह व्यापक मूल्यों के सन्दर्भ में परिवर्तन का समर्थन करता है।

3. व्यवहारवाद वास्तविकता से पूर्णतया असम्बद्ध है, उसका ध्येय तो अमूर्तिकरण व सूक्ष्म-विश्लेषण है। उत्तर-व्यवहारवाद यथार्थ से सम्बद्ध रहकर वर्तमान संकटों का सामना करके मानव जाति को रचनात्मक योग देना चाहता है।

4. व्यवहारवाद मूल्य-रहित विज्ञान पर जोर देता है। उसका उद्देश्य वैज्ञानिक शोध से समस्त व्यक्ति निष्ठ सामग्री जैसे प्रयोजनों, भावनाओं, इच्छाओं तथा विचारों आदि को निकाल फेंकना था। उत्तर-व्यवहारवाद इस सत्य के प्रति सचेत है कि मूल्यांकन के सम्बन्ध में विज्ञान कभी तटस्थ नहीं रह सकता। अतः ज्ञान की सीमायें जानने के लिये, ज्ञान के आधारभूत मूल्यों के प्रति सचेत रहना आवश्यक है।

5. उत्तर व्यवहारवाद की यह आस्था है कि बुद्धिजीवियों का प्रमुख दायित्व एवं कार्य सभ्यता के मानवीय मूल्यों की रक्षा करना है। मानव मूल्यों के प्रति तटस्थ रहने पर, वैज्ञानिकों के विशेषाधिकारों का कोई अर्थ नहीं रह जाता और वे मात्र शिल्पी या यंत्रविद रह जाते हैं।

6. बुद्धिजीवी का कार्य ज्ञान अर्जन करना तथा तदनुकूल कर्म करने के दायित्व का वहन करना है। बुद्धिजीवियों का दायित्व है अपने ज्ञान को कार्य रूप में परिणत करना व समाज की पुनर्रचना में व्यस्त होना।

7. उत्तर-व्यवहारवादियों के अनुसार, बुद्धिजीवियों के संघों व समुदायों को ज्ञान अर्जन तक ही सीमित न रहकर मानव मूल्यों की रक्षा के हेतु संघर्ष करना चाहिये।

इस प्रकार ईस्टन उत्तर-व्यवहारवाद के माध्यम से राजनीति विज्ञान का व्यावसायिक, शैक्षिक तथा मूल्यात्मक स्वरूप पूर्णतया परिवर्तित कर देना चाहता है। वह चाहता है कि राजनीति वैज्ञानिक समाज व विश्व के प्रति उत्तरदायी बनें। डेविड ईस्टन (David Easton) ने 1969 में अमेरिकन राजनीति विज्ञान के अपने अध्यक्षीय भाषण में उत्तर-व्यवहारवाद के अग्रांकित लक्षण बतलाये हैं—

1. असंगत होने से अस्पष्ट होना कहीं अधिक अच्छा है।[15]

15. "It was better to be vague than non relevantly precise."

2. उत्तर-व्यवहारवाद के मुख्य उद्देश्य 'क्या होना चाहिये' का अध्ययन किया जाना चाहिये।

3. राजनीति शास्त्र की सहायता करना उद्देश्य होना चाहिये ताकि मानव-जाति को वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सके।

4. राजनैतिक वैज्ञानिकों को उन मूल्य, अमूल्यों (Value Premises) के प्रति सचेत रहना चाहिये जिन पर वह आधारित है। उसे उन विकल्पों को दृष्टि-गत रखना चाहिये जिनकी प्राप्ति के लिये वह प्रयत्नशील है।

5. बुद्धि जीवियों का दायित्व मानवीय मूल्यों का आरक्षण करना है, केवल बौद्धिक शोध-कार्य करनामात्र ही नहीं।

6. वैज्ञानिकों का कार्य ज्ञान का उपार्जनमात्र नहीं है वरन् उपार्जित ज्ञान का किसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयोग करना भी आवश्यक है।[16]

7. व्यवसायों का राजनीतिकरण (Politicisation of Professions) न केवल वांछनीय ही है, अपितु अनिवार्य भी है।

## उत्तर-व्यवहारवाद के अन्तर्गत कार्यक्रम
## (Programme Under Post Behaviouralism)

उपरोक्त अध्ययन से यह स्पष्ट है कि उत्तर-व्यवहारवाद किसी सुनिश्चित विचारधारा पर आधारित सुसंगठित व्यक्तियों का समूह नहीं है। इसमें अनुदार-वादियों से लेकर वामपंथियों तक, नई पीढ़ी के स्नातकों से लेकर बुजुर्गों तक सभी वर्ग के लोग पाये जाते हैं। यह व्यवहार-वैज्ञानिकों से समाज की तात्कालिक समस्यायों, संकटों और चुनौतियों का अध्ययन करने तथा उनके समाधान ढूंढने की मांग करता है। अर्थात शोध समाज की आवश्यकता के सन्दर्भ में संगतिपूर्ण होना चाहिये। राजनीतिक विश्लेषण स्वयं को समाज के राजनीतिक सम्बन्धों से विलग न रखे, अन्यथा शोध अथवा विश्लेषण अर्थहीन हो जायेगा। प्रत्येक प्रकार के शोध को किसी न किसी प्रकार के मूल्य पर आधारित रहना चाहिये। राजनैतिक अध्ययन को मूल्य रहित नहीं बनाया जा सकता। यदि राजनैतिक अध्ययन में मूल्यों को प्रत्यक्ष रूप से रोका जायेगा तब वे अप्रत्यक्ष रूप से अवश्य ही प्रवेश कर जायेंगे। शोध चुनाव करते समय शोध कर्ता का अपनी पूर्व-धारणाओं से प्रभावित होना अपरिहार्य है। शोधकर्ता चुनाव से पूर्व व उस समय भी उस अध्ययन के उद्देश्यों को निश्चित करता है। अतः शोधकर्ता (Researcher), वस्तुगत (Objective) होने के प्रयासों के बावजूद मूल्यों के प्रभावों को रोकने में असमर्थ रहता है। उत्तर-व्यवहार-वाद तथ्यों व मूल्यों (Facts and Values) के मध्य, व्यवहारवाद द्वारा खड़ी की गई दीवार को तोड़ना चाहता है तथा तथ्यों व मूल्यों के सह-अस्तित्व (Co-exis-

16. "To know is to bear the responsibility for acting and to act is to engage in re-shaping society."
—*Easton*

tence) में विश्वास रखता है। उत्तर-व्यवहारवाद के अनुसार, राजनीति-विज्ञान का कार्यक्रम इस प्रकार होगा—

1. तकनीकी प्रविधियों व पद्धतियों को 'पूर्णता' के स्थान पर 'पर्याप्तता' के दृष्टिकोण से देखा जाये।
2. यद्यपि व्यवहारवाद की विशेषताओं को बनाये रखा जाय तथापि उसकी सीमाओं व अपूर्णताओं को स्वीकार किया जाये।
3. केवल वर्णन, व्याख्या और अवबोधन तक सीमित रहा जाये, लक्ष्यों के निर्देश का प्रयास न किया जाये।
4. सर्वप्रथम तात्कालिक समस्याओं पर दृष्टि केन्द्रित की जाये। मूलभूत शोध तथा मौलिक प्रश्नों को बाद में लिया जाये।
5. राजनीतिशास्त्र की परम्परा से सम्बद्ध रहा जाये। ज्ञान के आधार पर आचरण किया जाये।
6. इस धारणा का त्याग कर दिया जाये कि सक्रिय राजनीति में भाग लेने पर राजनीतिवेत्ता एक वैज्ञानिक नहीं रह पायेगा। यह कार्य तीन प्रकार से सम्पादित किया जा सकता है—
   (i) अध्यापन,
   (ii) शोध कार्य, तथा
   (iii) सक्रिय राजनीति में भाग लेकर।

राजनीतिवेत्ता एक विद्वान, राजनीतिज्ञ व परामर्शदाता का कार्य कर सकता है। यह कार्य अकेले भी किया जा सकता है और सामूहिक रूप से भी। शिक्षकों को मानव-मूल्यों की रक्षार्थ कटिबद्ध रहना चाहिये।

उत्तर-व्यवहारवादियों ने व्यवहारवादियों के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त, राजनीतिक अध्ययनकर्ता का दायित्व केवल नीति निर्माण व उसके कार्यान्वित करने में सलाहमात्र है, का विरोध किया। उसके अनुसार राजनैतिक विश्लेषकों को एक बुद्धिजीवी के समान अपना दायित्व 'सामाजिक समस्याओं का समाधान' स्वीकार करना मानना चाहिये। इस सिद्धान्त का प्रतिपादन करते समय उत्तर-व्यवहारवाद, प्लेटो, मार्क्स, जान ड्यूई तथा आधुनिक अस्तित्वता (Existentialism) के समीप आ जाता है। ड्यूई के अनुसार व्यवहारवादी विकास एक द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया (Dialectical process) है।

अर्जित किये गये ज्ञान को सामाजिक हित के लिये प्रयोग करना चाहिये। इसे भी विज्ञान की भाँति राष्ट्र की परिधि से ऊँचा उठकर अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण करना चाहिये। विश्लेषकों को चाहिये कि वे 'सामान्य सिद्धान्त' (over-arching theory) का प्रतिपादन करें। वे 'क्या हैं' के स्थान पर 'क्या होना चाहिये' का अध्ययन करें। शोध केवल ज्ञान एवं विषय तक ही सीमित न रहकर समाज से सम्बन्धित रहने चाहियें। एक राजनीतिक अध्ययनकर्ता का प्रथम कार्य सामाजिक

परिवर्तन (Social change) होना चाहिये। उसे व्यक्तिगत रूप से इस कार्य में हिस्सा लेना चाहिये ताकि अपने लक्ष्य की प्राप्ति की जा सके।

**उत्तर-व्यवहारवाद : मूल्यांकन (Post Behaviouralism : An Evaluation)**

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि उत्तर-व्यवहारवाद ने व्यवहारवाद की मान्यताओं को अपने मूलरूप में स्वीकार नहीं किया। अपनी आवश्यकता के अनुसार उसने वर्तमान मान्यताओं में परिवर्तन किया। यदि समाज की माँग के अनुसार व्यवहारवाद ने विश्वसनीय ज्ञान की माँग को पूरा किया तो उत्तर-व्यवहारवाद ने कुछ कदम आगे बढ़कर इस ज्ञान को ज्ञान के लिये ही न मानकर सामान्य हित के लिये उपभोग करने पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। उन्होंने यह मत व्यक्त किया कि इच्छित परिणाम प्राप्त करने के लिये शोध की तकनीकों तथा लक्ष्य में सूत्र-बद्धता आवश्यक है।

उत्तर-व्यवहारपरकतावाद का प्रतिपादन करते समय ईस्टन की विचारधारा में आधारभूत परिवर्तन हो गया है। यह निर्विवाद सत्य है कि मूल्यों को ग्रहण करने के पश्चात कोई वैज्ञानिक नहीं बना रह सकता चाहे उन्हें समस्याओं का समाधान करने के लिये ही ग्रहण किया गया हो। पर अब ईस्टन मूल्यों को अपनाने पर भी राजनैतिक वैज्ञानिक बने रहना सम्भव मानता है। इतना ही नहीं, वह राजनीतिक वैज्ञानिकों को उनका खुलकर प्रतिपादन व समर्थन करने को प्रोत्साहित करता है। पर यह कार्य एक सामान्य मनुष्य के द्वारा सम्भव नहीं है। ईस्टन राजवैज्ञानिकों से मूल्य-निरपेक्ष अथवा तटस्थ भाव से अलग रहकर अध्ययन करने के स्थान पर स्वयं उनको समाज की रक्षा करने के लिये आगे आने के लिये आह्वान करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि ईस्टन उत्तर-व्यवहारवाद का समर्थन करते समय आदर्शवादी बन गया है। उसका व्यवस्था-मण्डल प्राकृतिक विज्ञान के सादृश्य पर विकसित किया गया है। यह सादृश्य अनुभव के आधार पर सत्य नहीं उतरता। उसने व्यष्टि-विश्लेषण करने के स्थान पर राजनीतिक व्यवस्था के द्वारा समष्टि-विश्लेषण को प्रधानता दी है। इस प्रकार उसने समग्रता को आंशिकता से उच्च स्थान प्रदान किया है। ईस्टन के बचाव पक्ष में यह कहा जा सकता है कि यह सत्य है कि किसी समग्र घटना की संपूर्णता को समझ कर ही उसके अंगों या अंशों को समझा जा सकता है। ईस्टन की राजनीतिक व्यवस्था भी विश्लेषणात्मक रचना या संरचना ही है। पर प्रश्न यह है कि उसके सिद्धान्त को वास्तविक या मूर्त राजनीतिक व्यवस्थाओं में विश्लेषण में किस प्रकार प्रयुक्त किया जाये ? वास्तव में यह एक व्याख्यार्थ परियोजना है, सिद्धान्त नहीं है। यद्यपि वह राजनीतिक व्यवस्थाओं का एक सामान्य आनुभविक राजनीति-शास्त्र का विकास कहता था, तथापि अपनी अत्यन्त व्यापक सामान्यता के कारण उसका सामान्य शास्त्र वास्तविकता न रहकर इससे (वास्तविकता से) बहुत दूर चला गया। उसका स्वरूप विश्लेषण के प्रयोजन के लिये एक धारणामूलक संरचना से कुछ अधिक नहीं है।